श्रीः ।

प्रयाग की सरस्वती मासिक पत्रिका से पुनर्मुद्रित ।

गुलबहार

वा

आदर्श भ्रातृस्नेह.

उपन्यास.

परिवर्तित परिवर्द्धित और संशोधित आवृत्ति ।

श्रीकिशोरीलालगोस्वामि-लिखित.

श्रीछबीलेलालगोस्वामि-द्वारा

श्रीसुदर्शनप्रेस वृन्दावन में मुद्रित और प्रकाशित

दूसरी बार १०००] सन् १६१५ ईस्वी [मूल्य चार आने ।